नवम्बर 1982 को एनर्जी सिचुएशन के डिस्कशन के बारे में आंकड़ें प्रस्तुत किए गए हैं। इसमें कहा गया है कि कोटा में जो दो थर्मल पावर स्टेशन कायम किए जाने थे, एक को 9 सितम्बर 1982 तक और दूसरे को जून 1983 तक अपना कार्य आरम्भ कर देना चाहिए। माननीय मंत्री जी को यह बताना चाहता हूं कि सितम्बर 1982 तो खत्म हो गया है, क्या मैं इस कार्य की प्रगति जानने की इच्छा रख सकता हूं। इन शब्दों के साथ मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया।

SHRI P. SHIV SHANKAR: On various aspects the hon. Member has made suggestions—be it for the purpose of taking care of or with reference to the transmission lines or with reference to the cooperative institutions involving themselves in power generation—and I will take note of them. I need not dwell on those aspects.

Sir, I am aware that in some places—as have already Stated—the generation has not been going on according to the schedule. Various projects could not be completed according to the schedule, there had been slippages and there had been quite a long delay.

The last question that my hon. friend raised with reference to Kota Thermal Power Station is also one such. I am not denying that part of it because I myself have said that there had been slippages in various projects.

SHRI KRISHNA KUMAR GOYAL: Why don't you ask for an enquiry? As far as Kota Thermal Power Station is concerned, it has been delayed because of defective machinery.

SHRI P. SHIV SHANKAR: I may tell you the problem is of the State Electricity Boards and the State Governments. I have already said what measures are being taken, so far as Centre is concerned, with reference to helping them in monitoring, advising them, trying to procure also for them the various equipments. On our part, we are doing our best. But the question of an enquiry is a matter which will have to be left to the regime of the State Government. It had been a very moot point with reference to BHEL. I would not like to enter into a discussion on this point. We might say that the performance of the BHEL with reference to supply of equipment had not been satisfactory. Well, they had their own reasons for the difficulties that they had been facing. It is true. In fact, it has been appearing in the newspapers. There is also truth to a great extent that the equipments supplied by BHEL had not been free from difficulties. I would not like to say that it was totally otiose but not free from difficulties and it has created a large number of problems for different sectors. This is not the time that I should go into the performance of the BHEL. But, I think; I myself have conceded that a large number of projects that should have been generating power on schedule had not been doing it for various reason. I don't see how I should go into the enquiry with reference to Kota Thermal Power Plant; but, nonetheless, I would certainly convey to the State Government t he anxiety of this House with reference to this plant.

श्री छोटे सिंह यादव : मेरा एक ही प्रश्न था उसका भी उत्तर नहीं आया। प्रश्न यह था कि जो अध्ययन दल आपने नियुक्त किया है क्या उसके विषयों में यह भी शामिल करेंगे कि लोगों ने बिजली के पम्प सेटों के स्थान पर डीजल के क्यों लगवा लिये ?

श्री पी० शिव शंकर : मैंने यह कहा कि जहां तक आपने मुख्तलिफ़ सुझाव दिये हैं उनको मैंने नोट किया है।

MR. DEPUTY SPUEAKER: He has noted down your suggestions. You have made good suggestions.

---

**14.08 hrs.**

## PETITION *RE.* PREVENTION OF CRUELTY TO ANIMALS

SHRI MOOL CHAND DAGA (Pali): I beg to present a petition signed by Shri Ajeet Rai Surana and others regarding prevention of cruelty to animals under the provisions of the Pervention of Cruelty to Animals Act, 1960 and ban on export of farm pelts.

---

## MATTER UNDER RULE 377

(i) NEED FOR A T.V. CENTRE AT ALLAHABAD.

**श्री कृष्ण प्रकाश तिवारी** (इलाहाबाद): मान्यवर, उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद का समूचे देश की राजनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है और आज भी है। सामाजिक सांस्कृतिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी इलाहाबाद का एक विशेष महत्व रहा है। इलाहाबाद में पवित्र संगम है यहां हर वर्ष कुम्भ मेला तथा हर छठे वर्ष अर्ध कुम्भ मेला और बारहवे साल पूर्ण कुम्भ मेला लगता है, जिसमें देश भर के लाखों लोग भाग लेते हैं।

इलाहाबाद का यह दुर्भाग्य है कि आज तक इलाहाबाद दूरदर्शन के मैप पर नहीं है जब कि इलाहाबाद में बहुत कम महत्वपूर्ण स्थानों पर टेलीविजन की व्यवस्था है।

इलाहाबाद स्वतंत्रता की लड़ाई का केन्द्र बिन्दु रहा है। इलाहाबाद में डाक तार माइक्रो वेव लिंक उपलब्ध है और उससे थोड़ी धनराशि की व्यवस्था कर के दूरदर्शन का प्रारम्भ वहां किया जा सकता है। मैंने दिसम्बर सन् 1981 में माननीया प्रधान मंत्री जी तथा संचार मंत्री जी से निवेदन किया था। परन्तु उस पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है।

जनहित में मेरा निवेदन है कि अविलम्ब इलाहाबाद में दूरदर्शन की व्यवस्था कराने के लिए शासन उचित कार्यवाही करे तथा निर्देश दे।

(ii) NEED TO CONTROL APPLE SCALE DISEASE AND TO PROVIDE FINANCIAL ASSISTANCE TO APPLE GROWERS IN HIMACHAL PRADESH.

**श्री कृष्णदत्त सुलतानपुरी** (शिमला): उपाध्यक्ष महोदय, हिमाचल प्रदेश में अधिक बर्फ तथा पहाड़ों के खिसकने से प्रतिवर्ष फलदार पोधों को काफी हानि होती है।

**14.10 hrs.**

[*Shri N. K. Shejwalkar in the Chair*

यही नहीं मेरे संसदीय चुनाव क्षेत्र में शिमला, सिरमौर, सोलन, आदि में सेव, आड़ू, खुमानी, पलम और टमाटर की खेती होती है, जो वहां के किसानों की कैश-क्राप है। इन सब में बिमारियां हर वर्ष लगती हैं, समय पर दवाई न मिलने की वजह से किसानों को भारी नुक्सान उठाना पड़ता है और जो गरीब लोग हैं, वह अपने पौधों को और नकद फसल को बचाने के लिए कोई उपाय नहीं कर पाते, जिससे कि उन्हें लाखों रूपये का नुकसान होता है। इस सबंध में भारत सरकार से मैं यह मांग करूंगा कि हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों में सेव में जो हर वर्ष स्केप की बीमारी, जो काश्मीर से लेकर सारे हिमाचल प्रदेश में फैल गयी है, इसको खत्म करने हेतु भारत सरकार शीघ्र से शीघ्र कदम उठाये ताकि जो बगीचें लाखों एकड़ में किसानों के लगे हैं, वे नष्ट न हो जायें।

इस सम्बन्ध में भारत सरकार अधिक से अधिक मात्रा में दवाइयों का अनुदान देकर किसानों की आर्थिक सहायता करे जिससे कि उनके बीजों को बीमारी से बचाया जा सके। राज्य सरकार को